

# **Impact of CSIR Floriculture Mission in Himachal Pradesh**





Hill states like Himachal Pradesh have cooler temperatures and favourable climates making ideal conditions for flower cultivation. Compared to the plains where agriculture is more common, hill regions typically have fewer agricultural activities. This reduces competition for resources such as land, water, and labour, allowing flower cultivators to establish themselves more easily. Weather diversity in Himachal Pradesh from Sub-tropical in lower hills to temperate in high altitudes brings opportunities to farmers for cultivation of exotic flower crops during the off season. Flower cultivation offers a diversified source of income for farmers in hill states. It can serve as a profitable alternative or supplementary crop to traditional crops like grains or vegetables, reducing dependency on single crops and enhancing overall economic resilience. In India, CSIR-Institute of Himalayan Bio-resource Technology (CSIR-IHBT) has been in the forefront of developing floriculture sector in the country. Under CSIR Floriculture Mission, the institute provided quality planting material of flowers like marigold, gladiolus, lilium and tulips, rose, chrysanthemum, tuberose, gerbera, carnation, limonium, eustoma and sunflower w.r.t. the geographical and climatic conditions of Himachal Pradesh.

Area extension: In collaboration with the line departments like Department of Horticulture, Ministry of MSME, the institute brought 291 ha area under floriculture in Himachal Pradesh from 2021—24.







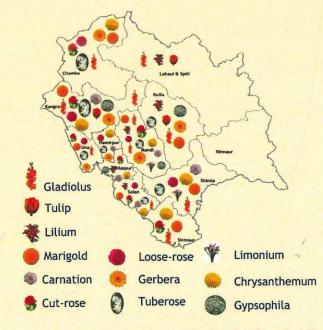


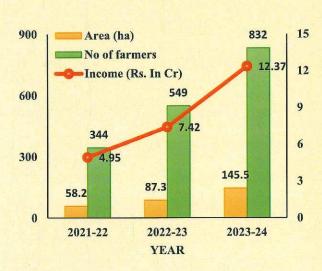




Training programs organized in various districts of Himachal Pradesh

Training programs: A total of 89 awareness cum training programmes on cultivation and value addition technologies of floricultural crops were organized during last three years of CSIR-floriculture mission and more than 2827 unemployed youth, rural women (self-help groups) and farmers were acquainted with various cultural practices, crop management, propagation, disease and insect-pest management, harvesting and post-harvest management including market linkages.





Enhancement of farmers' income in subsequent years through CSIR Floriculture Mission in HP

Planting material distribution across districts in Himachal Pradesh

Distribution of planting material: Around 85.69 lakh quality planting material of carnation, chrysanthemum, tuberose, lilium, cut rose, lose rose, gypsophila, limonium, tulip, gerbera, gladiolus, marigold, Eustoma and sunflower have been distributed to the farmers of all the districts of Himachal Pradesh.



Glimpse of planting material distribution to various districts of Himachal Pradesh

In total, 1725 farmers of Himachal Pradesh generated income about Rs. 24.74 crores during the last three years of CSIR-floriculture mission.

Development of cool chain facility: The institute has established one cold storage facility at Bagsiad, Mandi benefitting 110 farmers of cooperative 'The Bagsiad Farmer Development Cooperative Society, Mandi, Himachal Pradesh'. The institute has also created refrigerated van facility to transport fresh flowers from farmers field to the various flower markets of Delhi, Chandigarh etc,.





Marigold at farmer's field at Una, HP



Gerbera at farmer's field at Bhuntar, Kullu, HP



Lilium at farmer's field at Udaipur, Lahaul & Spiti, HP



Carnation farmer's field at Bagsiad, Mandi, HP



Carnation farmer's field at Tang-Narwana, Dharamshala, HP



Gypsophila farmer's field at Thunag, Mandi, H.P.



Gerbera farmer's field at Bilaspur, HP



Limonium farmer's field at Chakmoh, Hamirpur, HP



Marigold farmer's field at Narwana, Yol, Kangra, HP



Chrysanthemum farmer's field at Sunni, Shimla, HP



Chrysanthemum farmer's field at Shimla, HP



Carnation farmer's field at Solan, HP



Marigold field, Dhanot, Jwalaji, HP



Carnation farmer's field at Solan, HP



Lilium at farmer's field at Kangra



Carnation, Mandi (HP)



Sunflower farmer's field at Mahog, Solan, H.P.



Gerbera planting at farmer's field at Dharamshala, Dist. Kangra, Himachal



Limonium, Bilaspur (HP)



Tulips, Lahaul (HP)



Soil less Tulip cultivation, CSIR-IHBT



Tulip Garden, CSIR-IHBT



Marigold farmer's field, Baijnath, Kangra



Gypsohila plantation at farmer's field, Bilaspur, HP

Urban Floriculture: Flowers contribute to environmental conservation by promoting biodiversity and enhancing ecosystem services. Under the Mission, we developed 137 gardens in different schools, colleges and 23 vertical gardens developed at public places during 2021-2024 in various districts of Himachal Pradesh.



Kendriya Vidyalya Yol Cantt., HP



GSSS, Chachian, Kangra, HP



GPS, Tikkar, Hamirpur, HP



Govt Primary School, Bhatwara, Bilaspur



Vertical Garden at Dharamshala Airport



Vertical Garden at AIIMS Bilaspur, HP



Vertical Garden at Forest Office, Palampur, HP



Vertical Garden at DC Office, Dharamshala, HP

### Press and media clippings

मिशन फ्लोरिकल्चर के तहत स्कूलों

में बना रहे गार्डन, 20 स्कूल में 43

किरमों के 2500 पीधे बांटे जा चुके



Landscape plantation drive in schools by CSIR-IHBT



पालमपुर संस्थान ने प्रतारिकत्वर . पादकाता बहिया, राजकीय प्राविभक्त भिरान के उपनीर्ण अर्थन प्रचारिकाल्यर विद्यालक हाट गरनकीय मास्त्रपीक के तहत तरह सरकारी विद्यालयों में पहरताता वरिया व राजकीय उच्च उद्यान विकसित करवाने के लिए 650 पीचे रोपे। राजकीय वरिष्ट्र माध्यमिक पादशाता लाहता, डाढ, शहीद गर्कश काम्हतकावा (स

विद्यातय गोवातपुर शामित है। मिरान हम्मो का स्टाहरू ने विद्यार्थियों को प्रीयों एवं उद्यान केवलन में

सी.एस.आई.आर.

प्रशासक के आपने के आदेशांस्थी के इस निवाद के कहा निवाद करोकित्या में जात 2500 पीत लाग व मुझे के पीते मित्रा करोकित्या में जात 2500 पीत लाग व मुझे के पीते मित्रा मोत्री आपने मित्रा मित्रा में प्रशास करने के प्रशास में मित्रा माने की इस निवाद में मित्रा में प्रशास कर के मित्रा मित्रा माने की 5 प्राणीन में में में मित्रा ट्रिक्ट प्रमेश के माने मित्रा माने के 5 प्रशास में में में में मित्रा माने की 5 प्रशास में में में में में मित्रा माने मित्रा माने मित्रा में में में मित्रा माने मित्रा मि

-रिमाचल में ट्युलिप की बागवानी

12,500 फुट की ऊंचाई पर लाहौल स्पीति के गांवों में ट्युलिप गार्डन तैयार



ट्यूनिय के मुंटर फूलों को देखने के लिए अब किसी को करमीर पार्टी जने को ज़करत नहीं है, हिमाचल के लाहेल मुन्नति के तीन गांवों में ट्यूनिय की फ़म्मत तैयार ते कुत्रों ते इसका गेव मोएमआईआ (काउमित्त और मार्टिएक्स एंड इंडॉस्ट्रपन रिसर्च) के हिमालय जैव संपद प्रीडॉरिंग्सी संस्थान (आईएकबेटी) पत्सपुत के जात है जे किसानों को बरिक्षण दे रहा है। संस्थान का ये जात ह जो कामाना को प्रशासका दे तह है। सम्बन्ध को या प्रशास कामाना को दार्श्वीस्थ के फूलों के किए विदेशों पर हमें निर्भर नहीं रहता पड़िया हिमानात में ही देश के विभिन्न कामी में इसकी सम्बन्ध हो सम्बेगी आईएसमीटी के निरोक्त डॉक्टर मंजय कुमार ने वताया कि देश में अभी दुर्जुल्य कम ही पेटा होता है। अधिकार इसका बन्ध नौरहालैंड से आधार करते हैं। भारत में इसका बन्ध प्रवर्धन नहीं होता है जिसमें इसका बल्च ज्वादा कीमत में लोगों को मिलता है। श्रीनगर के ट्यूलिय गार्डन की बात करें ले वहां भी ट्यूलिय के बल्चड 25-30 हमये में आयात किए जाते हैं।

पालमपुर से बेहतर द्यूलिय की पैदावार लाहौल स्पीति में: डॉ. भाव्य भागव

आईएनबीटी के वैज्ञानिक डॉक्टर भाव्य भागंव ने  टयूलिप गार्डन से मिली पालमपुर को नई पहचान

## पालमपुर में उत्पादित ट्यूलिप पुष्प अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में भगवान श्रीराम जी को अर्पित किए जाएंगे



## Tourists throng Palampur's Tulip Garden

the minimum may imposed the utility habits from Helbardin 2018 and started trials for local-sed production. It has more than 20 varieties of hitps.
The isotiuse hikited experi-mental tests in the Lahaut valley to explore the commercial cuits variety promotal of futing, flour-

om Structural Design To Tulips For eremony, Ram Mandir Got Technical Assistance From Four

Institutes; Help From IITs, ISRO

OXO



मसालों में सरताजः देश में हिमाचल ने उगाई सबसे पहले हींग, फूलों की खेती में भी आत्मनिर्भर बनेगा

के सीव्यक्तिकरण के लिए पीचे मेंट करते हुए। 
काई जार आई एस.जी.टी.
आई.जार आई एस.जी.टी.
आई.जार आई एस.जी.टी.
के सीवाय सी सतीवेकल्या में सिर्मा के लिए पीचे का 
किसार पिकारी परिष्ठ हैं सिर्मा के लिए पीचे का 
किसार किया।

EADING UCIEANISas much as you want 
कि साहण के सामानावारों को पीचे 
स्कुल के प्रधानावारों को पास 
अस्थान सिर्मा हुए सो मोर्च पर स्कुल के 
प्रधानावारों किसार पर स्कुल के 
प्रधानावारों किसार स्कुल के 
प्रधानावारों किसार पर स्कुल के 
प्रधानावारों किसार स्कुल के 
प्रधानावारों किसार पर स्कुल के 
प्रधानावारों किसार स्कुल के 
स्कुल के प्रधानावारों किसार पर स्कुल के 
प्रधानावारों किसार स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के प्रधानावारों किसार स्कुल के 
स्कुल के प्रधानावारों किसार स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के स्कुल के 
स्कुल के स्कुल के स्क

में

37 म् क 37 में प्रव इसं

## राज्य स्तरीय होली

पालमपुर की एतिहासिक होली के रंगों में नए रंग भरता टयूलिप गार्डन तेयार किया है हिसालय जैव संपदा



तेवार किया है सिमानय जैन संपद्ध प्रीवर्धीनाई संस्थार अपन्यापु द्वारा संपद्ध के वैज्ञानिकों ने लाग्नील अपीत क्षेत्र के वैज्ञानिकों ने लाग्नील अपीत क्षेत्र क्ष्यापक तीथ के पक्षात कर केन को दुर्गीलय के सत्य के लिए उपयुक्त पाता : तिसक्क पक्षात उर्दालय क्ष्याप कर पालस्था पक्षात उर्दालय क्ष्याप कर पालस्था 1000 वर्षा मीटर के इस दुर्गीलय गार्वत के 5,000000 दुर्गीलिय के भीचे लाग्याप गए हैं वैज्ञानिकों के अनुसार दुर्ग्यूलय का एक पूल 15 दिन तक हो गार्क के दिल्ला हरूक है। विश्व में सक्सी अधिक क्ष्योर्थन जो दुर्ग्य हो। में में है एक दुर्गुलिय किश्व का ऐसा तीस्था एक हैं उनका है। सस्मी अधिक क्ष्योर्थन क्ष्योर्थन होंगी है अपने मनमाक्र लाल पीले व करेत तक्सा पूर्त है जिसको सबसे अधिक खरीद होती है अपने भनमाहक लाल पाले व क्षेत तथा गुलाबी घटक रंगों के कारण यह पूर्व आवर्षण का केंद्र रहते हैं। भारत में प्रतिवर्ष विदेशों

में ६८ कार्यं के ट्यूर्वलय का आयात किया जाता है। येथे में हिमालय जैन संपदा परिवर्धिकों संस्थान हमा संप्रधानां की अपने कर्मीयेकारण सिमान के आंग्रेस ट्यूर्वलय की खेती में कियानों की बहै स्थार पर मोहणे को जातायर आपने की गई है। इसके शिनए कियानों की ट्यूर्वलय के स्थान में उपलब्ध करवादा आगते । संस्थान के निदेशक जी संजय कुमार बातते हैं कि संप्रधानां क्रमोरीकारण की ब्यूर्वन के लिए संस्थान प्रधानस्थान हमें क्यूर्वन के स्थान संस्थान प्रधानस्थान है तथा हमें काही से ट्यूर्वलय गार्वन तैयार किया गया है

गीतेश सिंह भृगु वेशव प्रतिनिध पालनपुः मी : 94180-45533





**CSIR-Institute of Himalayan Bioresource Technology** Post Box No. 6 Palampur-176061, H.P., INDIA Tel: +91-1894-230411, Fax: +91-1894-230433 E-mail: director@ihbt.res.in

